



बस के सफर से बिस्तर तक-3

“मैं अब रुका नहीं और धीरे धीरे उनकी चुत को अपनी पूरी जीभ निकाल कर चाटना शुरू कर दिया जिससे ममता जी की कमर अपने आप ही हरकत में आ गयी और वो अपनी कमर को ऊपर नीचे करने लगी। ...”

Story By: mahesh kumar (maheshkumar_chutpharr)

Posted: Monday, February 26th, 2018

Categories: [रिश्तों में चुदाई](#)

Online version: [बस के सफर से बिस्तर तक-3](#)

बस के सफर से बिस्तर तक-3

एडल्ट स्टोरी का पिछला भाग : [बस के सफर से बिस्तर तक-2](#)

मैंने धीरे से अपना हाथ उनकी ब्रा के ऊपर रख दिए... पहले तो मैंने दोनों कबूतरों को एक बार प्यार से सहलाया और फिर झटके से उनकी ब्रा को ऊपर की तरफ खिसका दिया जिससे ममता जी की दोनों चूचियां ब्रा के कपों में से बाहर आ गयी और अब मेरे सामने दो आजाद कबूतर उछल रहे थे।
“अआआ..हूहह... ओय... ये क्या कर है ?” ममता जी ने अचानक से अपना मुँह मेरे मुँह से छुड़वा कर कहा और अपनी ब्रा को फिर से नीचे करने की कोशिश करने लगी.

मगर मैंने तुरन्त अपना हाथ उनकी नंगी चूची पर रख कर उसे अपने हथेली में पूरा भर लिया. मेरे हाथ का अपनी नंगी चुची पर स्पर्श होते ही ममता जी के मुँह से “इईईई... श्शशशश... ओय... इईईईई...” की आवाज निकल गयी और वो सिहर गयी... उन्होंने मेरे हाथ को पकड़ लिया और “नहीं... अब बहुत हो गया... बस अब...” कहते हुए मुझे हटाने लगी.

मगर मुझमें अब और सब्र नहीं बचा था, मैंने उनके हाथों को पकड़ लिया और थोड़ा जबरदस्ती से उनके हाथों को हटा कर उनकी नंगी चूचियों पर टूट पड़ा... जो एक बड़े से आम की जितनी तो रही होगी.

ममता जी के हाथों को हटा कर उसी वक़्त मैंने अपना मुँह उनकी नंगी चूची के निप्पल पर रख दिया और किशमिश के दाने जैसे निप्पल को मुँह में भर लिया, मुँह में डालते ही ममता

जी जोर की सिसकारी सी भरते हुए कराह पड़ी- इईईई... श्रश्रशश... अआआ... ह्हहह
हहहह... महेश्रश...

मैं भी अब पूरे जोश में आ कर उनकी चूचियों को चूसने लगा.

ममता जी के मुँह से अब कराहों के साथ हल्की हल्की सिसकारियाँ निकलने लगी थी और वो अब अपने हाथों को छुड़ाने का या फिर मुझे हटाने का भी प्रयास नहीं कर रही थी। मैंने भी अब उनके हाथों को छोड़ दिया और यह सही मौका जान कर ममता जी की चूची को चूसते हुए ही अपना हाथ नीचे उनके पेट पर से होते हुए चुत की तरफ बढ़ा दिया.

और जैसे ही मैंने उनकी चुत को छुआ “इईईई... श्रश्रशश... अ.अ.ओय...” की आवाज के साथ ममता जी ने दोनों जांघों को भींच लिया मगर मेरा हाथ जो उनकी चुत पर था वो भी अब दोनों जांघों के बीच ही बन्द हो गया।

मेरे हाथ की उंगलियाँ अब दोनों जांघों के बीच उनकी चुत पर थी जो की हल्की हल्की हरकत कर रही थी। इतने देर से चूमने चाटने और चूसने का खेल खेलते खेलते ममता जी की मुनिया रानी अपना काम रस छोड़ चुकी थी और बहुत ही गीली हो गई थी जिसकी वजह से सलवार का कपड़ा भी चुत से चिपका हुआ था।

ममता जी ने एक तो पेंटी नहीं पहन रखी थी और दूसरा प्रेमरस से भीग कर सलवार का कपड़ा भी चुत से चिपक गया था इसलिये मुझे सलवार के ऊपर से उनकी चुत की बनावट महसूस हो रही थी जो काफी फूली हुई थी।

ऐसा महसूस हो रहा था जैसे ममता जी ने अपनी दोनों जांघों के बीच पाव (डबल रोटी) दबा रखा हो। चुत पर छोटे छोटे और हल्के से ही बाल थे शायद हफ्ते दस दिन पहले ही ममता जी ने उन्हें साफ किया होगा।

मैंने भी उनकी चुत को अपने हाथों की मुट्ठी में कैद कर लिया और उसे स्पंज की तरह मसलने लगा लेकिन प्यार से। उस छुवन ने ममता जी को सिहरा सा दिया, उन्होंने अपनी

जांघों को और भी जोरो से भींच लिया और “इईईई...श्रशशश...” कहते हुए मेरे कंधों को जोरो से भींच लिया।

मुझसे अब रहा नहीं जा रहा था इसलिये ममता जी चुत को सहलाते हुए पहले तो एक बार मैंने उनकी सलवार का जायजा ले कर देखा, सलवार में नाड़ा नहीं था बल्कि इलास्टिक लगा हुआ था जो निकालने में काफी आसान थी, मैंने धीरे से सलवार के ऊपरी किनारों को पकड़ लिया और फिर धीरे धीरे उसे नीचे खिसकाने लगा.

सलवार थोड़ा सा ही नीचे हुई थी की ममता जी ने तुरन्त मेरे हाथ को पकड़ लिया और... “नहीं... ये सब नहीं... अब बस्स...” कहते हुए मुझे अपने ऊपर से धकेल कर अलग कर दिया.

मगर मैंने भी अब देर ना करते हुए दोनों हाथों से सलवार के ऊपरी किनारों को पकड़ कर जोर से नीचे खींच दिया. ममता जी के कूल्हों के नीचे दबी होने के कारण सलवार एक बार तो उनके कूल्हों में फँसी भी मगर फिर वो घुटनों तक उतरती चली गयी.

ममता जी “अ..अ..र. ऐ..ऐऐऐऐ.. ओय... ओय... ओयय... क्या कर रहा है....” कहते हुए तुरन्त उठ कर बैठ गयी और दोनों हाथों से अपनी चुत को ढक लिया। ममता जी के दोनों हाथ अब अपनी चुत को ढकने में व्यस्त हो गये थे इसलिये मैंने उनके घुटनों में फँसी बाकी सलवार को भी निकाल कर अलग कर दिया.

और ममता जी बस “अ..अ..र.ऐ.. रेररे... ओय... ओय... ओय... क्या कर रहा है... रूक... रूक... रूक...” कहती रह गयी।

ममता जी का कमीज पहले ही उनकी चूचियों तक चढ़ा हुआ था और सलवार को भी मैंने अब उतार दिया था जिससे ममता जी लगभग अब नंगी ही हो गयी थी।

शर्म के मारे उन्होंने जल्दी से रजाई को ओढ कर अपने नंगे बदन को छुपा लिया और “ओय... ये सब नहीं... वापस कर मेरी सलवार... बहुत हो गया... अब और नहीं...”

ममता जी ने अपनी सलवार को मुझसे छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा मगर मैंने उनकी सलवार वापिस नहीं की बल्कि मैं अब जल्दी जल्दी अपने कपड़े उतारने लगा.

ममता जी के चेहरे पर अब घबराहट व शर्म के भाव उभर आये- ये.ये.ये... तू क्या कर रहा है... अ.अ. ओय... तू कपड़े क्यों उतार रहा है ?

ममता जी घबराते हुए कहने लगी ।

मैंने बस टी-शर्ट व नीचे एक निक्कर ही पहना हुआ था जिन्हें मैं जल्दी से उतार कर उतार कर बिल्कुल नंगा हो गया और ममता जी की रजाई में घुसने लगा.

“न्.न्.नन नही ई.ई. ईईईई...”ममता जी बुदबाते हुए मुझे पकड़ने की कोशिश करने लगी मगर मैं थोड़ी सी जबरदस्ती करके उनकी रजाई में घुस गया और उनके मखमली नंगे बदन से चिपक गया...

मेरे नंगे बदन का अपने नंगे बदन से स्पर्श होते ही ममता जी सिहर सी गयी... “न.न. नही.इ. ईईईईई... श्रश्रशशश... ओय...”

उत्तेजना व घबराहट के कारण ममता जी का पूरा बदन कम्पकपाने लगा था, वो सिसकारते हुए मुझे हटाने की कोशिश करने लगी... मगर मैं उनके बदन से किसी जोंक की तरह चिपकता चला गया ।

खड़े होने पर ममता जी का कमीज थोड़ा सा नीचे उनकी चूचियों पर आ गया था मगर उनकी चूचियाँ अब भी ब्रा के बाहर ही थी, मैंने कमीज को चूचियों के ऊपर तक खिसका कर फिर से उनकी चूचियों को नंगा कर लिया.

ममता जी अब बिल्कुल नंगी मेरे नीचे लेटी हुई थी और मैं उनके मखमली बदन के स्पर्श का मजा ले रहा था. मेरी नंगी छाती उनकी चूचियों की पिसाई कर रही थी तो मेरा उत्तेजित लंड ममता जी की दोनों जांघों के बीच अपनी असली जगह ढूँढ रहा था ।

ममता ने अपनी दोनों जांघों को जोरो से भींच रखा था और मेरे लण्ड के स्पर्श से बचने के

लिये वो कसमसाते हुए मुझे हटाने की भी कोशिश कर रही थी.

मगर मैंने उन्हें ऐसे ही दबाये रखा... मैंने हल्के से बस एक बार ममता जी के कम्पकपाते होंटों को चूमा और फिर सीधा उनके चिकने बदन को ऊपर से चूमते हुए धीरे धीरे नीचे की तरफ खिसकने लगा.

उनकी चूचियों व पेट पर से चुमते हुए मैं धीरे धीरे उनकी चुत की तरफ बढ़ रहा था जिससे ममता जी “न.न. नही.इ. इईईई... श्रश्रशश... महेशश... अआआ... ह्हह...” कहते हुए बल से खाने लगी...

ममता जी मदहोश सी होकर मुँह से हल्की हल्की सिसकारियाँ सी भर रही थी.

जैसे ही मैं नीचे उनकी चुत के पास पहुंचा... “अ.ओ.य... न.न.नही.इ.

इईईई...श्रश्रशश....” कहते हुए ममता जी ने दोनों हाथों से मेरे सिर को पकड़ लिया और तुरन्त उठ कर बैठ गयी. मगर मैं रुका नहीं, मैं उनके दोनों पैरों के बीच बैठ गया और थोड़ा सा ऊपर हो कर उनकी नंगी चूचियों को चूमने चाटने लगा, ममता जी की चूचियों को चूमते हुए मैं अपने शरीर का भार डाल कर धीरे धीरे उन्हें बिस्तर पर भी धकेल रहा था.

और मेरे हल्का सा धकेलते ही ममता जी फिर से बिस्तर पर लुढ़क गयी। ममता जी के बिस्तर पर गीरते ही मैं उनकी चूचियों को छोड़ कर फिर से उनकी चुत पर आ गया. इस बार ममता जी ने उठने की कोशिश तो नहीं की मगर उन्होंने अपनी चुत को दोनों हाथों से छुपा लिया था.

मैंने हल्की सी जबरदस्ती की तो ममता जी ने अपने हाथों को भी चुत पर से हटा लिया और अब ममता जी की नंगी चुत मेरे सामने थी. अपने आप ही अब मेरा सिर उनकी जांघों के बीच झुकता चला गया जहाँ से उनकी नंगी चुत की हल्की हल्की मादक सी गंध आ रही थी.

जैसे ही मैंने अपना सिर उनकी जांघों के बीच झुकाया, ममता जी ने फिर से मेरे सिर को दोनों हाथों से पकड़ लिया, उन्होंने अपनी दोनों जांघों को भी सिकोड़ने की कोशिश की

मगर एक तो मैं उनके पैरो के बीच बैठा हुआ था और दूसरा मेरा सिर उनकी जांघों के बीच में था इसलिये वो अपनी जाँघें बन्द नहीं कर सकी।

मैंने सीधा ही उनकी चूत को नहीं चूमा बल्कि मैं उनकी नर्म मुलायम जांघों को अन्दर की तरफ से चूमते हुए धीरे धीरे उनकी चूत की तरफ बढ़ रहा था जिससे ममता जी फिर से सिसकारने लगी. जैसे जैसे मैं उनकी चूत की तरफ बढ़ रहा था, ममता जी की जाँघें अब फैलती जा रही थी, साथ ही मुझे गीलापन और गर्मी भी महसूस हो रही थी। यह इतनी देर से चल रही इस चुदाई क्रीड़ा का असर था कि उनकी चूत ने अपना रस बाहर निकाल दिया था।

मैंने सहसा अपने होंठ सीधे उनकी चूत पर रख दिये और उनकी छोटी सी नर्म मुलायम चिकनी नंगी चूत को प्यार से चूम लिया.

”महेशशश... इईईई... शशशशश...” कहते हुए ममता जी ने मेरे बालों को जोर से पकड़ लिया, ममता जी को एक झटका सा लगा था जिससे उनका पूरा बदन थरथरा गया और एक मीठी सी सुबकी के साथ उनकी दोनों जाँघें मेरे सिर पर कस गयी।

उफफफ... क्या गर्म चूत थी, मानो किसी आग की भट्टी पर ही मैंने अपने होंठ रख दिये हों.

मैं उनकी चूत को चारों तरफ होंठों से धीरे धीरे ऐसे ही चूमता रहा जिससे उनकी जाँघें फिर से अलग होने लगी। उनकी चूत कामरस से भीग कर पूरी तरह से गीली हो चुकी थी जो मेरे होंठों व मुँह को भी रस से भरती जा रही थी, मेरे होंठ व मुँह का स्वाद बिल्कुल नमकीन हो गया था। कामरस की चिकनाई ने चूत को चिकना भी कर दिया था जिससे मेरे होंठ अपने आप ही उनकी चूत पर फिसलने लगे और फिसलते हुए नीचे चूत के प्रवेश द्वार तक आ गये।

ममता जी को जैसे ही मेरे होंठों की गर्मी का एहसास अपने कामद्वार पर हुआ, उनके बदन

ने झुरझुरी सी ली “ईईईई... श्शशश... अआआ... ह्हहह हहहह... महेशश... श्शशश...” ममता जी ने जोर से सिसकारते हुए कहा और स्वतः ही उनकी टाँगें और भी फैल गयी।

मैंने भी उनकी चूत को अपनी पूरी जीभ निकाल कर चाट लिया जिससे ममता जी सुबक उठी और मेरे सिर के बालों को दोनों हाथों की मुट्ठी में भर लिया।

मैं अब रुका नहीं और धीरे धीरे उनकी चुत को अपनी पूरी जीभ निकाल कर चाटना शुरू कर दिया जिससे ममता जी की कमर अपने आप ही हरकत में आ गयी और वो अपनी कमर को ऊपर नीचे करने लगी।

मैं ममता जी की नंगी चुत को ऊपर से नीचे तक चूस व चाट रहा था, साथ ही अपनी जीभ को उनकी गुफा की गहराई तक अन्दर बाहर भी कर रहा था और ममता जी मेरी जीभ के साथ साथ ही अपनी कमर को हिलाते हुए “ईईईई... श्शशश... अआआ... ह्हहह... ईईईई... श्शशश... अआआ... ह्हहह... महेशश...” की आवाजें निकाल रही थी।

ममता जी की उत्तेजना देख कर मैंने भी अब थोड़ा तेज़ी से उनकी चूत को अन्दर तक चाटना और चूसना शुरू कर दिया जिससे ममता जी की सिसकारियाँ तेज हो गयी और उनकी कमर की हरकत भी तेज होने लगी। ममता जी ने दोनों हाथों से मेरे सिर को पकड़ा हुआ था जिससे वो खुद ही जोर से मेरे सिर को अपनी चूत पर दबा दबा कर घिसने लगी.

मैंने भी अब एक लम्बी सी सांस अन्दर खींची और तेज़ी से अपनी पूरी जीभ उनकी चूत में डाल कर अन्दर बाहर करने लगा। ममता जी की चूत मचल कर ढेर सारा पानी छोड़ रही थी और उसमें अपनी पूरी चपलता से जीभ चलाते हुए मैं चपर चपर की अवाज के साथ उनकी चूत से निकलने वाले काम रस को गटक रहा था।

मेरी जीभ और चूत के मिलन का स्वर कमरे में ममता जी की सिसकारियों के साथ गूँज सा रहा था।

“उफफफ... महेशशश... इईईई... श्रश्रशशश... अआआ... ह्ह्ह्हहह... इईईई...
श्रश्रशश... अआआ... ह्ह्ह्हहहह...” कहते हुए वो जोरो से अपनी चुत को मेरे मुँह पर
घिस रही थी।

शायद ममता जी स्वलित होने की कगार पर पहुँच गयी थी... मजा तो मुझे भी बहुत आ
रहा था मगर मैं सोचने लगा की कहीं... ‘ममता जी एक बार स्वलित होने के बाद मुझे
दोबारा से अपने आप को हाथ लगाने से मना तो नहीं करने लगेगी ? अगर मना नहीं करेंगी
तो वो नखरे तो जरूर ही दिखायेंगी और मुझे उन्हें मनाने के लिये फिर से मेहनत करनी
पड़ेगी.”

यह बात मेरे दिमाग में आते ही मैं उनकी चुत को छोड़ कर अलग हो गया और सीधा उनके
ऊपर चढ़ कर लेट गया।

यह एडल्ट स्टोरी जारी रहेगी.

अपने विचार मुझे मेल करें कि आपको मेरी कहानी कैसी लग रही है !

chutpharr@gmail.com

एडल्ट स्टोरी का अगला भाग : [बस के सफर से बिस्तर तक-4](#)

Other stories you may be interested in

क्लासमेट की मां चोद दी

बात तब की है जब मैं और कुलजीत कक्षा 12 में पढ़ते थे. कुलजीत की अभी दाढ़ी नहीं निकली थी. चिकना और गोल मटोल था. चूतड़ ऐसे कि गांड मारने को उत्तेजित करते थे. वह मेरे घर के पीछे वाली [...]

[Full Story >>>](#)

चुदने को बेताब मेरी प्यासी जवानी-1

दोस्तो, मेरा नाम ऋतु है, ऋतु वर्मा, सरनेम पर मत जाइए, मैं एक बंगाली लड़की हूँ। उम्र है 24 साल, लेकिन ब्रा मैं 38 साइज़ का पहनती हूँ। देखा 38 साइज़ सुनते ही मुंह में पानी आ गया न आपके। [...]

[Full Story >>>](#)

मौसी की लड़की को पटा के चोदा-2

दोस्तो, मैं कार्तिक गुप्ता फिर से हाज़िर हूँ आपके सामने अपनी सच्ची सेक्स कहानी मौसी की लड़की को पटा के चोदा-1 का दूसरा भाग लेकर ... जैसा कि मैंने पहली कहानी में बताया मैं अलीगढ़ उत्तर प्रदेश का रहने वाला [...]

[Full Story >>>](#)

सेक्सी भाभी को पूरी नंगी करके चोदा

दोस्तो, मैं नीतीश (मेरठ से) एक बार फिर हाज़िर हूँ अपनी अगली कहानी को लेकर, जैसा कि मैंने पिछली कहानी प्यासी भाभी की चूत में लगाई खुशी की चाबी में आपको बताया कि था कैसे मैंने चचेरी भाभी की चूत [...]

[Full Story >>>](#)

दोस्त की जुगाड़ भाभी की डबल चुदाई

मेरे प्यारे दोस्तो, कैसे हो आप सब ... मैं आपका दोस्त शिवराज एक बार फिर से एक सच्ची घटना लेकर आया हूँ. आप सबका जो प्यार मुझे मिला, वो ऐसे ही देते रहना. इस बार मैं आपको एक हसीन हादसा, [...]

[Full Story >>>](#)

